[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3572

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

आंतरिक एवं बाह्य सज्जा में रंग संयोजन

श्रीमती कृष्णा शर्मा,
विभागाध्यक्ष (गृह विज्ञान विभाग)
शासकीय श्यामसुंदर नारायण मुशरान महिला महाविद्यालय, नरसिंहपुर

''रंग प्रकाश का एक गुण है'' जिन्हें आंखे देखती हैं। रंगों का मानव जीवन से घनिष्ठ सम्बंध है। प्रत्येक सुंदर वस्तु मनुष्य के ह्रदय और भावनाओं को प्रभावित करती है। सजावट में रंगों का वही महत्व है जो भोजन में नमक का। जिस तरह बगैर नमक के भोजन फीका हो जाता है उसी तरह बगैर रंगों के घर की आंतरिक एवं बाह्य सज्जा की कल्पना ही व्यर्थ है। रंगों का प्रभाव कमरे को बड़ा कर सकता है, छोटा कर सकता है, गरम कर सकता है ठंडा कर सकता है। रंग नीरस वातावरण को उल्लासमय बना सकता है, साधारण सजावट को भव्य बना सकता है।

स्टैला सुंदरराज के अनुसार '' Colour removes the drabness from life and enhances the beauty of objects. Its appeal is universal''

रंगों को मुख्यतः दो भागों में बांटा जा सकता है –
(1) प्राथमिक रंग (Primary colour)
(2) द्वितीयक रंग (Secondary colour)

(1). प्राथमिक रंग (Primary colour) – लाल, पीला और नीला इन्हें किसी भी अन्य रंगों को मिलाने से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

(2). द्वितीयक रंग (Secondary colour) – जब दो प्राथमिक रंगों को समान मात्रा में मिश्रित किया जाता है, तब एक नया रंग तैयार हो जाता है। इस नए रंग को द्वितीयक रंग कहते हैं।

तीन प्राथमिक रंग यानि लाल, नीला, पीला, रंग चक्र में बराबर दूरी पर होते हैं। इनके बीच में द्वितीयक (सेकेण्डरी) रंग यानि वे रंग होते हैं जो इनके संगम से बनते हैं।

गर्माहट या ठंडापन (Warmth or coolness)– आंतरिक सज्जा की दृष्टि से रंग में एक और महत्वपूर्ण गुण होता है, उसका गर्मपन या ठंडापन। ऐसे रंग जिसमें पीला या लाल रंग की मात्रा मिली हुई होती है, गर्म रंग कहलाते हैं, व जिन रंगों में नीले सफेद रंगों की मात्रा मिली होती है, ठंडे रंग कहलाते हैं। हरा और जामुनी रंग गर्म और ठंडे रंगों के मिश्रण से बनते हैं। पीला मिश्रित हरा रंग गर्म रंग के अंतर्गत आता है, जबकि नीला मिश्रित हरा रंग ठंडा होता है।

आंतरिक सज्जा में रंगों का गर्मपन और ठंडापन इसलिए महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसका संबंध वस्तु से होता है, जिसमें गर्मपन और ठंडापन रहता है। गर्म प्रदेशों वाले घरों में ठंडे रंगों का प्रयोग करना चाहिए एवं ठंडे प्रदेशों वाले घरों में गर्म रंगों का प्रयोग उपर्युक्त रहता है। इसी प्रकार उत्तर दिशा में स्थित घरों में पीले रंग का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि सूर्यप्रकाश का प्रभाव उत्पन्न हो।

आंतरिक एवं बाह्य सज्जा में रंगों का उपयोग –रंगों के प्रभाव से कमरा छोटा या बड़ा होने का आभास भी दे सकता है। गृह सज्जा में यदि रंगों के प्रयोग में अनुरूपता नहीं होती है तो पूरी–पूरी सजावट अनाकर्षक हो जाती है। इसके विपरीत यदि रंगों के प्रयोग में अनुरूपता होती है, तो सजावट आकर्षक लगती है, तथा मन को आनंद प्रदान करने वाली होती है।

(चित्र–1) अगर गहरे रंग प्रयोग किये जायें तो स्थान छोटा प्रतीत होता है, परन्तु हल्के रंगों के प्रयोग से स्थान बड़ा लगेगा। पुराने मकानों में जहां छत पर कोई गहरा रंग किया जाये और दीवारों पर सफेद रंग किया जाये तो छत अपेक्षाकृत नीची प्रतीत होगी।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

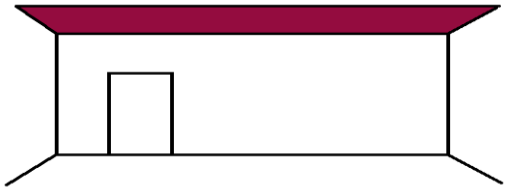

चित्र – 1

दीवारों पर गहरा रंग करने से कमरा छोटा लगेगा छत पर हल्का तथा दीवारों पर गहरा रंग करने से छत ऊँची नजर आयेगी। नीची छत पर सफेद रंग किया जाये तो प्रकाश का परावर्तन होकर कमरे में एकसा उजाला रहेगा।

रंग चक्र में से कोई एक रंग चुनकर उसके दांये बांये के रंग लेकर इनका प्रयोग भी किया जा सकता है। जैंसे हरे रंग के साथ हरा पीला तथा हरा–नीला प्रयोग किया जा सकता है।

(चित्र – 2) अगर कोई कमरा लम्बोतरा है, यानि लम्बाई ज्यादा और चौड़ाई बहुत कम है तो आमने–सामने की लम्बी दीवारों पर हल्के रंग तथा छोटी दीवारों पर गहरे रंग करने से कमरा इतना लम्बा प्रतीत न होगा।

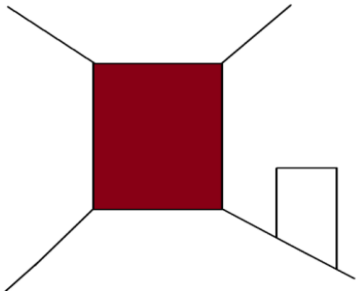

चित्र – 2

(III) लम्बे कमरे की छोटी दीवारों पर गहरा रंग करने से कमरा अपेक्षाकृत बेहतर लगेगा और ज्यादा लम्बा प्रतीत न होगा।

विभिन्न कमरों के लिए रंग आयोजना –

(1). **बैठक कक्ष** (Deawing room) – बैठक कक्ष में एक आकर्षक रंग योजना आवश्यक है। इसमें ऐसे रंगों का उपयोग किया जाये जो मन में शांति एवं प्रसन्नता के भाव जगायें इसलिए इसके लिए रंग न तो अधिक नीरस हों और ना ही भड़कीले हों अतः बैठक कक्ष में सामान्यतः दीवारों छतों और फर्श पर सादा या तटस्थ रंगों का उपयोग किया जाता है।

(2). **शयन कक्ष** (Bed room) – शयन कक्ष के लिए व्यक्तिगत पसन्द अधिक महत्व रखती है। यदि शयन कक्ष महिला एवं बच्चों के लिए हैं, तो उसमें हल्के रंग जैसे गुलाबी रंग और यदि वह पुरूषों के लिए हैं, तो उसमें ऊष्म रंगों जैसे बादामी या पीला रंग उपयुक्त होगा।

(3). **भोजन कक्ष** (Dining room) – भोजन कक्ष का उपयोग थोड़े समय के लिए होता है। अतः शांतिप्रद ठंडे रंगों का उपयोग ठीक रहता है। इसलिए सफेद क्रीम या हल्के आसमानी रंग प्रयोग करना चाहिए।

(4). **रसोई** (Kitchen) – यदि रसोई घर में प्राकृतिक प्रकाश धूल, होने की सम्भावना में भूरा, हरा, बादामी या हल्का, पीला रंग उपयुक्त रहेगा।

(5). **अध्ययन कक्ष** (Study room) – इस कक्ष का उपयोग अधिक समय तक होता है, अतः सादे तटस्थ रंग जैसे हल्का, पीला, बादामी या क्रीम रंग का आयोजन सफलता पूर्वक किया जा सकता है।

(6). **स्नान घर** (Bath room) – बाथ रूम में ताजगी एवं प्रफुल्लता भरे रंगों का उपयोग होना चाहिए। हल्का क्रीम, सफेद, पीला या आसमानी रंग आदि शामिल है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

(7). शिशु कक्ष (Nursery room) –बच्चों को भड़कीले एवं चटकीले रंगों से प्रेम होता है। अतः ऐसे रंगों का उपयोग फर्नीचर, चित्रों खिलौनों में हो सकता है।

रंग योजनायें –

(A). विपरीत योजना (Compliementry) – यह उत्तेजित रंग योजना है, यह पूर्णतः संतुलित रहती है। इसमें एक दूसरे के सामने काम्प्लीमेंटरी अथवा विपरीत रंग रहते हैं।

(B). खंडित विपरीत योजना (Split Complementary) – किसी रंग विशेष के सामने वाले रंग के दायें–बांये के दो रंग का उस रंग विशेष के साथ चुनाव किया जाये। जैसे – पीला व बैंगनी का प्रयोग तो काम्पलीमेन्टरी कहलायेगा, परन्तु पीले के साथ लाल, बैंगनी व नीला, बैगनी का प्रयोग स्प्लिट काम्प्लीमेंटरी कहलायेगा।

(C). त्रिकोणीय रंग योजना (Triad) – चक्र में बराबर दूरी के तीन रंग अगर रंग योजना के लिए चुने जायें तो वह त्रिकोणीय स्कीम कहलायेगी।

(D). चौरंगी रंग योजना (Tetrad) – चक्र पर बराबर की दूरी के चार रंगों की योजना चौरंगी या टेट्राड योजना कहलाती हैं।

इस प्रकार बाह्य एवं आंतरिक सज्जा में हम विभिन्न प्रकार की योजनाओं में से कोई भी रंग योजना इच्छानुसार चुन सकते हैं।

रंगों का जादू –

- रंग योजनाओं से आंतरिक एवं बाह्य सज्जा में रंगों का चुनाव आसानी से हो सकेगा।
- छोटे कमरों में हल्के रंग करें।
- बड़े कमरों में गहरे रंग किए जा सकते हैं।
- गर्म स्थान एवं दक्षिणी तथा पश्चिमी दिशा के कमरों में कूल रंग करें।
- ठंडे स्थान एवं उत्तरी तथा पूर्वी दिशा के कमरों में गरम रंग करें।
- एक कमरे में एक ही रंग यानि गरम अथवा ठंडे को ही प्रमुखता दें। अन्य रंगों का कम प्रयोग करें।
- ऊंची छत पर गहरा रंग करने से छत नीची प्रतीत होगी।
- रसोईघर में ठंडे रंगों का प्रयोग करें।
- ड्राईंग रूम/लिविंग रूम में सबको पसंद आने वाले सौम्य रंग करें।
- बेडरूम में शीतलता प्रदान करने वाले रंगों का प्रयोग करें।

संदर्भ ग्रंथ

1. *होम डेकोरेशन – अशोक गोयल, पुस्तक महल, 1993, पृष्ठ क्रं. 81, 82, 84, 88, 90।*
2. *आवास गृह सज्जा तथा घरेलू उपकरण – डॉ. मंजू पाटनी, श्रीमती अनुराधा अवस्थी, शिवा प्रकाशन इंदौर, 1997, पृष्ठ क्रं. 68, 72, 76, 79।*
3. *गृह प्रबंध – कांति पांडेय, हिन्दी माध्यम, कार्यानवय निदेशालय दिल्ली, पृष्ठ क्रं. 173, 187।*
4. *गृह विज्ञान – डॉ. चन्द्रकांता मेहता, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर 2010, पृष्ठ कमांक 242।*
5. *गृह सज्जा का परिचय – डॉ. करूणा शेर्मा, डॉ. मंजू पाटनी, शिवा प्रकाशन, इंदौर, 2009, पृष्ठ क्रं. 43, 47।*